हे राजा ! सधनपना, और निरोगीपना. यह दोनों इस लोकमें सुखके कारण हैं, जो रोगी है सो मरे हुये की गिनतीमें आया, उसके धन है तो क्या उपयोगमें आया, परंतु तेरे को तो यह दोनों अनुकूल हैं तौभी रोगी जैसा दीखता है, यह क्रोधरूपी रोग तेरेको पांडवोंसे प्राप्त हुवा है दूसरा कुछ निमित्त दीखता: नहीं जो बहुत कडुवा है, बहुत कठोर है, बहुत तीक्ष्ण है, ऐसेको साधु गिल जाता है, दूसरेसे गिला जाता नहीं, सो तेरे, मस्तकमें भ्रम घुस रहा है, जो क्रोधको तू गिल जायगा तो सुखी होवैगा, इसके सिवाय दूसरा उपाय नहीं, रोगसे पीडित पुरुषको पुत्र, पौत्र, विषय, भोग, धन, इनसे सुख होता नहीं. रोगी होवे सो नित्य दुःखी रहता है, बडे हैं सो कपट विद्याका आश्रय करते नहीं. जो अपना किया कर्म सहन करता है. उसपै पराक्रम करना योग्य नहीं, और ऐसेपै क्रूर होके जो लक्ष्मी संपादन करता है

हे राजा! सधनपना, और निरोगीपना. यह दोनों इस लोकमें सुखके कारण हैं, जो रोगी है सो मरे हुये की गिनतीमें आया, उसके धन है तो क्या उपयोगमें आया, परंतु तेरे को तो यह दोनों अनुकूल हैं तौभी रोगी जैसा दीखता है, यह क्रोधरूपी रोग तेरेको पांडवोंसे प्राप्त हुवा है दूसरा कुछ निमित्त दीखता: नहीं जो बहुत कडुवा है, बहुत कठोर है, बहुत तीक्ष्ण है, ऐसेको साधु गिल जाता है, दूसरेसे गिला जाता नहीं, सो तेरे, मस्तकमें भ्रम घुस रहा है, जो क्रोधको तू गिल जायगा तो सुखी होवैगा, इसके सिवाय दूसरा उपाय नहीं, रोगसे पीडित पुरुषको पुत्र, पौत्र, विषय, भोग, धन, इनसे सुख होता नहीं, रोगी होवे सो नित्य दुःखी रहता है, बडे हैं सो कपट विद्याका आश्रय करते नहीं, जो अपना किया कर्म सहन करता है. उसपै पराक्रम करना योग्य नहीं, और ऐसेपै क्रूर होके जो लक्ष्मी संपादन करता है

हे राजा ! सधनपना, और निरोगीपना. यह दोनों इस लोकमें सुखके कारण हैं, जो रोगी है सो मरे हुये की गिनतीमें आया, उसके धन है तो क्या उपयोगमें आया, परंतु तेरे को तो यह दोनों अनुकूल हैं तौभी रोगी जैसा दीखता है, यह क्रोधरूपी रोग तेरेको पांडवोंसे प्राप्त हुवा है दूसरा कुछ निमित्त दीखता: नहीं जो बहुत कडुवा है, बहुत कठोर है, बहुत तीक्ष्ण है, ऐसेको साधु गिल जाता है, दूसरेसे गिला जाता नहीं, सो तेरे, मस्तकमें भ्रम घुस रहा है, जो क्रोधको तू गिल जायगा तो सुखी होवैगा, इसके सिवाय दूसरा उपाय नहीं, रोगसे पीडित पुरुषको पुत्र, पौत्र, विषय, भोग, धन, इनसे सुख होता नहीं. रोगी होवे सो नित्य दुःखी रहता है, बडे हैं सो कपट विद्याका आश्रय करते नहीं. जो अपना किया कर्म सहन करता है. उसपै पराक्रम करना योग्य नहीं, और ऐसेपै क्रूर होके जो लक्ष्मी सपादन करता है

अध्याय पांचवाँ ।

विदुर कहता है हे धृतराष्ट्र । पहिले स्वायंभु मनुने मूर्खोंके सत्रह लक्षण कहे हैं सो कहता हूं. श्रवण कर, यह सत्रह जने आकाशको मुक्की मारके तोडनेकी इच्छा करते हैं, अथवा आकाशमें इंद्रका धनुष तोडके देखनेवाले हैं अथवा सूर्य चंद्रकी किरणोंको मूठीमें पकडनेवाले हैं ऐसे ऐसे जो नहीं होनेका काम करनेवाले अत्यंत मूर्खोंमेंके मूर्ख समझना चाहिये. कुशिष्यको उपदेश करिकै गुरुपनाकी इच्छा करता है सो १ शत्रुकी सेवा करके कल्याण चाहता है सो २ कुभार्याकी चौकसी रखके उसके पाससे अच्छा चाहता है सो ३ नहीं मांगनेका मांगता है सो ४ थोडा लाभ होनेसे रिसाता है सो ५ थोडा करके बहुत प्रतिष्ठा कहता है सो ६ अनुचित कर्म करके कुलीनपना चाहता है सो ७ विश्वास करनेके लायक नहीं तिसका पेम

अध्याय पांचवाँ ।

विदुर कहता है हे धृतराष्ट्र ! पहिले स्वायंभु मनुने मूर्खोंके सत्रह लक्षण कहे हैं सो कहता हूं. श्रवण कर; यह सत्रह जने आकाशको मुक्की मारके तोडनेकी इच्छा करते हैं, अथवा आकाशमें इंद्रका धनुष तोडके देखनेवाले हैं अथवा सूर्य चंद्रकी किरणोंको मूठीमें पकडनेवाले हैं ऐसे ऐसे जो नहीं होनेका काम करनेवाले अत्यंत मूर्खोंमेंके मूर्ख समझना चाहिये. कुशिष्यको उपदेश करिकै गुरुपनाकी इच्छा करता है सो १ शत्रुकी सेवा करके कल्याण चाहता है सो २ कुभार्याकी चौकसी रखके उसके पाससे अच्छा चाहता है सो ३ नहीं मांगनेका मांगता है सो ४ थोडा लाभ होनेसे रिसाता है सो ५ थोडा करके बहुत प्रतिष्ठा कहता है सो ६ अनुचित कर्म करके कुलीनपना चाहता है सो ७ विश्वास करनेके लायक नहीं तिसका विश्व .

हे राजा ! सधनपना, और निरोगीपना. यह दोनों इस लोकमें सुखके कारण हैं, जो रोगी है सो मरे हुये की गिनतीमें आया, उसके धन है तो क्या उपयोगमें आया, परंतु तेरे को तो यह दोनों अनुकूल हैं तौभी रोगी जैसा दीखता है, यह क्रोधरूपी रोग तेरेको पांडवोंसे प्राप्त हुवा है दूसरा कुछ निमित्त दीखता: नहीं जो बहुत कडुवा है, बहुत कठोर है, बहुत तीक्ष्ण है, ऐसेको साधु गिल जाता है, दूसरेसे गिला जाता नहीं, सो तेरे, मस्तकमें भ्रम घुस रहा है, जो क्रोधको तू गिल जायगा तो सुखी होवैगा, इसके सिवाय दूसरा उपाय नहीं, रोगसे पीडित पुरुषको पुत्र, पौत्र, विषय, भोग, धन, इनसे सुख होता नहीं, रोगी होवे सो नित्य दुःखी रहता है, बडे हैं सो कपट विद्याका आश्रय करते नहीं, जो अपना किया कर्म सहन करता है. उसपै पराक्रम करना योग्य नहीं, और ऐसेपै क्रूर होके जो लक्ष्मी संपादन करता है

अध्याय पांचवाँ ।

विदुर कहता है हे धृतराष्ट्र । पहिले स्वायंभु
नुने मूर्खोंके सत्रह लक्षण कहे हैं सो कहता हूं. श्रवण
र; यह सत्रह जने आकाशको मुक्की मारके तोडनेकी
च्छा करते हैं, अथवा आकाशमें इंद्रका धनुष
ोडके देखनेवाले हैं अथवा सूर्य चंद्रकी किरणोंको
ुठीमें पकडनेवाले हैं ऐसे ऐसे जो नहीं होनेका काम
करनेवाले अत्यंत मूर्खोंनेके मूर्ख समझना चाहिये,
कुशिष्यको उपदेश करिकै गुरुपनाकी इच्छा करता
है सो १ शत्रुकी सेवा करके कल्याण चाहता है सो २
कुभार्याकी चौकसी रखके उसके पाससे अच्छा चाहता
है सो ३ नहीं मांगनेका मांगता है सो ४ थोडा लाभ
होनेसे रिसाता है सो ५ थोडा करके बहुत प्रतिष्ठा कह-
ता है सो ६ अनुचित कर्म करके कुलीनपना चाहता
है सो ७ विश्वास करनेके लायक नहीं तिसका विश्वास

जो जैसा अपनेको चाहता है तैसाही अपनभी उसको चाहना. भलेके साथ भला होना; कपटीके साथ कपटी होना.

हे धृतराष्ट्र ! मैं तेरेको पहिलेभी कह चुकाहूं फिरभी कहता हूं, केवल अभिमान रखसे धन, संपत्ति, प्राणादिक, सर्वस्व जाता है, अब धृतराष्ट्र पूछता है हे विदुर! वेदशास्त्रमें प्राणीकी सौ वर्षकी आयुष्य कही है, सो अब सौ वर्षके पहिलेही पूर्ण आयुष्य भोगे विनाही क्यों मरते हैं ? ऐसा सुनके विदुर कारण कहता है.

बडोंको तुच्छ करके बोलना १ सबसे ज्यादा अपनी बड़ाई बढाना २ देने योग्य है सो नहीं देना ३ विना कारण क्रोध करना ४ दूसरेको उपयोग नहीं होके अपनेही शरीरमात्रको सुख करना ५ मित्रके संग द्वेष करना ६ यह छः अवगुण तीक्ष्ण तलवार होके प्राणीके आयुष्यको तोडते हैं; मृत्यु नहीं तोडता है.

अध्याय पांचवाँ ।

विदुर कहता है हे धृतराष्ट्र ! पहिले स्वायंभु मनुने मूर्खोंके सत्रह लक्षण कहे हैं सो कहता हूं. श्रवण कर, यह सत्रह जने आकाशको मुक्की मारके तोडनेकी इच्छा करते हैं, अथवा आकाशमें इंद्रका धनुष तोडके देखनेवाले हैं अथवा सूर्य चंद्रकी किरणोंको मूठीमें पकडनेवाले हैं ऐसे ऐसे जो नहीं होनेका काम करनेवाले अत्यंत मूर्खोंमेंके मूर्ख समझना चाहिये. कुशिष्यको उपदेश करिकै गुरुपनाकी इच्छा करता है सो १ शत्रुकी सेवा करके कल्याण चाहता है सो २ कुभार्याकी चौकसी रखके उसके पाससे अच्छा चाहता है सो ३ नहीं मांगनेका मांगता है सो ४ थोडा लाभ होनेसे रिसाता है सो ५ थोडा करके वहुत प्रतिष्ठा कहता है सो ६ अनुचित कर्म करके कुलीनपना चाहता है सो ७ विश्वास करनेके लायक नहीं तिसका वेश्व

हे राजा! निरंतर मीठे वचन बोलनेवाले बहुत मिलेंगे परंतु कडुवा बोलके अपना भला होना ऐसी बात कहने वाला और सुननेवाला ऐसे दोनों दुर्लभ हैं राजाको कडुवा लगै चाहे मीठा. वो उनका कल्याण चाहके नीतिहीका वचन बोलैगा. उनको सहायक समझना और ऐसे ही पुरुष पासमें रहनेवाले राजाको सहाय वाला सबल समझना दूसरे पेटार्थी पासमें रहें तो क्या फल है.

कुलमें एक पुरुष खराब है और उसके छोडनेसे कुलकी रक्षा होती है तो उसको छोडदेना, कुलके छोड-नेसे गांवकी रक्षा होती है तो कुल छोडदेना. गांवछोड नेसे देशकी रक्षा होती है तो गांव छोडदेना. अपनी रक्षाके वास्ते सर्व पृथ्वीका राज्य छोडना.

संकट कालमे उपयोग पडैगा इसवास्ते धनका रक्षण करना. स्त्री. पुत्रके रक्षण वास्ते धन खर्च डालना

हे राजा! निरंतर मीठे वचन बोलनेवाले बहुत मिलेंगे
परंतु कडुवा बोलके अपना भला होना ऐसी बात कहने
वाला और सुननेवाला ऐसे दोनों दुर्लभ हैं राजाको
कडुवा लगै चाहे मीठा. वो उनका कल्याण चाहके
नीतिहीका वचन बोलैगा उनको सहायक समझना
और ऐसे ही पुरुष पासमें रहनेवाले राजाको सहाय
वाला सबल समझना दूसरे पेटार्थी पासमे रहें तो
क्या फल है.

कुलमें एक पुरुष खराब है और उसके छोडनेसे
कुलकी रक्षा होती है तो उसको छोडदेना. कुलके छोड-
नेसे गांवकी रक्षा होती है तो कुल छोडदेना. गांवछोड
नेसे देशकी रक्षा होती है तो गांव छोडदेना. अपनी
रक्षाके वास्ते सर्व पृथ्वीका राज्य छोडना ...२
संकट कालमे उपयोग पडैगा [illegible] वास्ते [illegible] नाकूं छोडके
रक्षण करना. स्री. पुत्रके रक्ष[illegible]

अध्याय पांचवाँ ।

विदुर कहता है हे धृतराष्ट्र ! पहिले स्वायंभु मनुने मूर्खोंके सत्रह लक्षण कहे हैं सो कहता हूं. श्रवण कर; यह सत्रह जने आकाशको मुक्की मारके तोडनेकी इच्छा करते हैं, अथवा आकाशमें इंद्रका धनुष तोडके देखनेवाले हैं अथवा सूर्य चंद्रकी किरणोंको मूठीमें पकडनेवाले हैं ऐसे ऐसे जो नहीं होनेका काम करनेवाले अत्यंत मूर्खोंमेंके मूर्ख समझना चाहिये. कुशिष्यको उपदेश करिकै गुरुपनाकी इच्छा कर है सो १ शत्रुकी सेवा करके कल्याण चाहता है सो कुभार्याकी चौकसी रखके उसके पाससे अच्छा चाह है सो ३ नहीं मांगनेका मांगता है सो ४ थोडा ल होनेसे रिसाता है सो ५ थोडा करके बहुत प्रतिष्ठा क ता है सो ६ अनुचित कर्म करके कुलीनपना चाह है सो ७ विश्वास करनेके लायक नहीं तिसका विश्व

देना, अपने अनुकूल और अपना कार्य अगतसे करता है ऐसा सहायक रखना, क्योंकि महा मुश्किलका काम होगा तो भी जिसको सहायक है उसको होना सहजही है; जो सेवक धनीका मनोगत काम समझके करता है आलस नहीं रखता है, हित रखता है, सदा अनुकूल प्रामाणिक धनीकी शक्ति जानता है, ऐसे सेवकको प्राण समान रखना चाहिये.

जो कहा काम सुनता नहीं, उन्मत्तपनेसे मैं नहीं करूंगा ऐसा स्पष्ट बोलता है, तुम्हारेसे हम समझदार हैं, ऐसा धनीको दिखाके, उनकी बोलीमें दूषण लगाता है; ऐसे सेवकको तुरन्त त्याग करना

जो निष्कपटी१ धैर्यवान्२ कहा काम जल्दी करे ३ दयावान् ४ मधुर बोलनेवाला ५ अपने धनीकूं छोडक- ... कभी होता नहीं ६ जिह्वा स्वाधीन

जिसका स्नेहके तर्फ चित्त नहीं ४ चंचलवृत्ति५अपनेको सयाना समझता है सो८.

दूसरे की सहायता बगैर द्रव्य प्राप्ति होती नहीं वैसेही सहायक द्रव्य विना तथा अर्थ विना होती नहीं इन दोनोंको एक ना एककी अपेक्षा है एक विना एक सिद्ध होता नहीं.

इस लोकमें जन्म लेके पुरुषको क्या करना चाहिये सो कहता हूं, स्वस्त्रीसे पुत्र उत्पन्न करना १ उनको विद्याभ्यास कराना २ ऋण नहीं छोडके कुछ आजीविका करके देना ३ कन्या होय तो उसको अच्छे स्थानमें देना ४ पीछे पुत्रके स्वाधीन कारबार करके अपन अरण्यमें तथा एकांत स्थानमें निरंतर परमेश्वरके ध्यानमें लगना ५ तो वो भजन कैसा करना कि, जिसमें प्राणीमात्रका हित होवै, अपनी आत्माको सुख होवै, शरीरको कष्ट पड़ा तोभी चिंता नहीं, केवल परमेश्वर प्रीत्य-

अध्याय पांचवाँ ।

विदुर कहता है हे धृतराष्ट्र ! पहिले स्वायंभु मनुने मूर्खोंके सत्रह लक्षण कहे हैं सो कहता हूं. श्रवण कर; यह सत्रह जने आकाशको मुक्की मारके तोडनेकी इच्छा करते हैं, अथवा आकाशमें इंद्रका धनुष तोडके देखनेवाले हैं अथवा सूर्य चंद्रकी किरणोंको मूठीमें पकडनेवाले हैं ऐसे ऐसे जो नहीं होनेका काम करनेवाले अत्यंत मूर्खोंनेके मूर्ख समझना चाहिये. कुशिष्यको उपदेश करिकै गुरुपनाकी इच्छा करता है सो १ शत्रुकी सेवा करके कल्याण चाहता है सो २ कुभार्याकी चौकसी रखके उसके पाससे अच्छा चाहता है सो ३ नहीं मांगनेका मांगता है सो ४ थोडा लाभ होनेसे रिसाता है सो ५ थोडा करके बहुत प्रतिष्ठा कह-ता है सो ६ अनुचित कर्म करके कुलीनपना चाहता है सो ७ विश्वास करनेके लायक नहीं तिसका विश्वास

पुत्र और कर्ण, पांच पांडव यह एक चित्तमें संपू-र्ण, समुद्र समेत पृथ्वीका पालक करें; तेरे पुत्र वन हैं जिसमें पांडव हैं सो सिंह हैं इसवास्ते तू वन सहित सिंहोंका छेदन मत कर, पांडव सिंह बगैर तेरे पुत्र वनका नाश होय सो नहीं होवै. क्योंकि सिंह विना वन नहीं; वन बगैर सिंह नहीं. जिस वनमें सिंहोंकी बस्ती है उस वनकी रक्षा है, वनसे सिंहोंकी रक्षा है.

दुष्टबुद्धिका पुरुष दूसरेके सद्गुण जाननेकी इच्छा नहीं रखता, दोषमात्र का शोधन रखता है और सद्गु-णोंपै जान बूझके दोष लगाता है, उत्तम पुरुष अर्थ की इच्छा करने वास्ते पहिले स्वधर्म आचरते हैं स्वधर्म छोड़नेसे कुछभी अर्थ प्राप्ति नहीं जैसे स्वर्ग लोक छोडनेसे अमृत नहीं.

जिसका चित्त पापोसे रहित होके ईश्वरके विषे लगा है उसने सब कुछ जाना. जिसने धर्म अर्थ काम

जो जैसा अपनेको चाहता है तैसाही अपनभी उसको चाहना. भलेके साथ भला होना; कपटीके साथ कपटी होना.

हे धृतराष्ट्र ! मैं तेरेको पहिलेभी कह चुकाहूं फिरभी कहता हूं, केवल अभिमान रखनेसे धन, संपत्ति, प्राणादिक, सर्वस्व जाता है, अब धृतराष्ट्र पूछता है हे विदुर! वेदशास्त्रमें प्राणीकी सौ वर्षकी आयुष्य कही है, सो अब सौ वर्षके पहिलेही पूर्ण आयुष्य भोगे विनाही क्यों मरते हैं ? ऐसा सुनके विदुर कारण कहता है.

बडोंको तुच्छ करके बोलना १ सबसे ज्यादा अपनी बड़ाई बढाना २ देने योग्य है सो नहीं देना ३ विना कारण क्रोध करना ४ दूसरेको उपयोग नहीं होके आपही शरीरमात्रको सुख करना ५ मित्रके संग द्वेष करना ६ यह छः अवगुण तीक्ष्ण तलवार होके प्राणीके आयुष्यको तोडते हैं; मृत्यु नहीं तोडता है.

को वैद्य है परंतु औषधी नहीं. यहां यंत्र मंत्र होमादि
काभी उपाय नहीं.

सिद्ध १ सर्प २ अग्नि ३ अपनी जात ४ इनकी
अवज्ञा करना नहीं, क्योंकि यह बहुत तेजस्वी होते
हैं. महातेजरूपी अग्नि काष्ठमे गुप्त है तबतक कोई
नहीं जानते; परंतु वोही काष्ठ सिलगके प्रगट हुये पीछे
जिस काष्ठमें थी उस सहित सब वनको जलाती है, ऐसे
ही अपने कुलमें पांडव अग्नि समान तेजस्वी हैं, क्षमावंत
हैं, जिससे अपना सामर्थ्य दिखाते नहीं. काष्ठमे अग्नि
जैसे रहै है.

हे राजा ! तू अपने पुत्रों सहित वेलिरूप है और
पांडव सोही एक बडा वृक्ष है; सो वेली बडे वृक्षका आश्र-
य लिये बिना बढती नहीं. तेरे पुत्र दुर्योधनादिक सो वन
हैं और वनमें पांडव हैं सो सिंह हैं, ऐसा जानके भ्रममें
मत पड. सिंह वनहीन नाश पाता है; वन सिंह हीन

है जो मित्र नहीं सो अपना गुह्य जाननेके योग्य नहीं
ो मित्र है परंतु सयाना नहीं अथवा सयाना भी है
र जिह्वा स्वाधीन नहीं तो ऐसेको गुह्य कहना नहीं.

परीक्षा किये वगैर प्रधान करना नहीं जो प्रधान
र्थ संपादन करना जानता है, गुह्यगुप्त रखना जानता
ी ानकी पदवीके लायक होताहै.

ाज ाजाकी सलाह या काम सिद्ध हुये पहिले
क हरीके बैठनेवालेभी जानते नहीं, वो राजा सबमें श्रेष्ठ-
है; द्रव्यादिकके लोभसे जो पापकर्म करताहै वो सिद्धि-
योंको न पाके किसी समयमें जीवनसेभी भ्रष्ट होताहै.

पुण्यकर्म अपने हाथसे हुआ सो सुखदेता है और
पुण्यकर्म नहीं हुआ तो पश्चात्ताप होता है जो ब्राह्मण
वेदाध्ययन किया नहीं तो जैसे वो श्राद्धमें बैठाने
लायक नहीं. वैसेही शत्रुके संग वर्तणूक करने वास्ते.

हे राजा! निरंतर मीठे वचन बोलनेवाले बहुत मिलेंगे परंतु कडुवा बोलके अपना भला होना ऐसी बात कहने वाला और सुननेवाला ऐसे दोनो दुर्लभ हैं राजाको कडुवा लगै चाहे मीठा. वो उनका कल्याण चाहके नीतिहीका वचन बोलैगा. उनको सहायक समझना और ऐसे ही पुरुष पासमें रहनेवाले राजाको सहाय वाला सबल समझना दूसरे पेटार्थी पासमें रहें तो क्या फल है.

कुलमें एक पुरुष खराब है और उसके छोडनेसे कुलकी रक्षा होती है तो उसको छोडदेना, कुलके छोड-नेसे गांवकी रक्षा होती है तो कुल छोडदेना. गांवछोड नेसे देशकी रक्षा होती है तो गांव छोडदेना. अपनी रक्षाके वास्ते सर्व पृथ्वीका राज्य छोडना.

संकट कालमे उपयोग पडैगा इसवास्ते धनका रक्षण करना. स्त्री. पुत्रके रक्षण वास्ते धन खर्च डालना

जो मित्र नहीं सो अपना गुह्य जाननेके योग्य नहीं
ो मित्र है परंतु सयाना नहीं अथवा सयाना भी है
र जिह्वा स्वाधीन नहीं तो ऐसेको गुह्य कहना नहीं.

परीक्षा किये बगैर प्रधान करना नहीं जो प्रधान
र्थ संपादन करना जानता है, गुह्यगुप्त रखना जानता
ी ·धानकी पदवीके लायक होताहै.

राजाकी सलाह या काम सिद्ध हुये पहिले
·हेरीके बैठनेवालेभी जानते नहीं, वो राजा सबमें श्रेष्ठ-
; द्रव्यादिकके लोभसे जो पापकर्म करताहै वो सिद्धि-
योंको न पाके किसी समयमे जीवनसेभी भ्रष्ट होताहै

पुण्यकर्म अपने हाथसे हुआ सो सुखदेता है और
पुण्यकर्म नहीं हुआ तो पश्चात्ताप होता है जो ब्राह्मण
वेदाध्ययन किया नहीं तो जैसे वो श्राद्धमे बैठाने
लायक नहीं. वैसेही शत्रुके संग वर्तणूक करने वास्ते.

ब्राह्मणोंका स्वरूप ब्राह्मणही जानते हैं, ऐसेही
ाका स्वरूप राजा जानता है स्त्रीका स्वरूप भर्तार
नता है प्रधानका स्वरूप राजा जानता है.
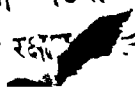
वध करने लायक अपराधी और अपने हाथसे पक-
गया सो शत्रु, इनको अपना वश चलै जहांतक
रना, जो नीचत्व धारके अपनी सेवा करनीभी मंजूर
या तौभी उसको छोडना नहीं, क्योंकि छोडनेसे
जल्दीही अपकार करता है.

देव १ राजा २ ब्राह्मण ३ वृद्ध ४ बालक ५ रोगी६
न्होंके विषे क्रोध आया तो समेट देना चाहिये, इस
गडेसे अच्छा होनेवाला नहीं, इस झगडेमें मूर्ख होवे
सो पडता है बुद्धिवान् पडता नहीं इसकरके लोग
उसको अच्छा कहते हैं.और अनर्थ उसको बाधता नहीं.

इस लोकमें अथवा परलोकमे जैसा अपना कर्म होवै
वैसीही संपत्ति तथा दारिद्र प्राप्त होताहै. बुद्धिवानोंकोही

हे राजा! निरंतर मीठे वचन बोलनेवाले बहुत मिलेंगे परंतु कडुवा बोलके अपना भला होना ऐसी बात कहने वाला और सुननेवाला ऐसे दोनों दुर्लभ हैं राजाको कडुवा लगे चाहे मीठा. वो उनका कल्याण चाहके नीतिहीका वचन बोलेगा उनको सहायक समझना और ऐसे ही पुरुष पासमें रहनेवाले राजाको सहाय वाला सबल समझना दूसरे पेटार्थी पासमे रहें तो क्या फल है.

कुलमें एक पुरुष खराब है और उसके छोडनेसे कुलकी रक्षा होती है तो उसको छोडदेना. कुलके छोड-नेसे गांवकी रक्षा होती है तो कुल छोडदेना. गांवछोड नेसे देशकी रक्षा होती है तो गांव छोडदेना. अपनी रक्षाके वास्ते सर्व पृथ्वीका राज्य छोडना ... २

संकट कालमे उपयोग पडेगा [illegible] वास्ते [illegible] गाकूं छोडके रक्षण करना. स्त्री. पुत्रके रक्ष[illegible]

ब्राह्मणोंका स्वरूप ब्राह्मणही जानते हैं, ऐसेही राजाका स्वरूप राजा जानता है स्त्रीका स्वरूप भर्तार जानता है प्रधानका स्वरूप राजा जानता है.

वध करने लायक अपराधी और अपने हाथसे पकडा गया सो शत्रु, इनको अपना वश चलै जहांतक मारना, जो नीचत्व धारके अपनी सेवा करनीभी मंजूर किया तौभी उसको छोडना नहीं, क्योंकि छोडनेसे वो जल्दीही अपकार करता है.

देव १ राजा २ ब्राह्मण ३ वृद्ध ४ बालक ५ रोगी६ इन्होंके विषे क्रोध आया तो समेट देना चाहिये, इस झगडेसे अच्छा होनेवाला नहीं, इस झगडेमें मूर्ख होवे सो पडता है बुद्धिवान् पडता नहीं इसकरके लोग उसको अच्छा कहते है.और अनर्थ उसको बाधता नहीं.

इस लोकमे अथवा परलोकमे जैसा अपना कर्म होवै सौही संपत्ति तथा दारिद्र प्राप्त होताहै. बुद्धिवानोंकोही

ब्राह्मणोंका स्वरूप ब्राह्मणही जानते हैं, ऐसेही राजाका स्वरूप राजा जानता है स्त्रीका स्वरूप भर्तार जानता है प्रधानका स्वरूप राजा जानता है.

वध करने लायक अपराधी और अपने हाथसे पकड़ा गया सो शत्रु, इनको अपना वश चलै जहांतक मारना, जो नीचत्व धारके अपनी सेवा करनीभी मंजूर किया तौभी उसको छोडना नहीं, क्योंकि छोडनेसे वो जल्दीही अपकार करता है.

देव १ राजा २ ब्राह्मण ३ वृद्ध ४ बालक ५ रोगी६ इन्होंके विषे क्रोध आया तो समेट देना चाहिये, इस झगडेसे अच्छा होनेवाला नहीं, इस झगडेमें मूर्ख होवे सो पडता है बुद्धिवान् पडता नहीं इसकरके लोग उसको अच्छा कहते हैं,और अनर्थ उसको बाधता नहीं.

इस लोकमें अथवा परलोकमे जैसा अपना कर्म होवै वैसीही संपत्ति तथा दारिद्र प्राप्त होताहै. बुद्धिवानोंकोही

ा, अपने अनुकूल और अपना कार्य अगतसे करता
ऐसा सहायक रखना, क्योंकि महा मुश्किलका
ाम होगा तो भी जिसको सहायक है उसको होना
हजही है; जो सेवक धनीका मनोगत काम समझके
रता है आलस नहीं रखता है, हित रखता है, सदा
नुकूल प्रामाणिक धनीकी शक्ति जानता है, ऐसे सेव-
कको प्राण समान रखना चाहिये.

जो कहा काम सुनता नहीं, उन्मत्तपनेसे मैं
नहीं करूंगा ऐसा स्पष्ट बोलता है, तुम्हारेसे हम
समझदार हैं, ऐसा धनीको दिखाके, उनकी बोलीमें
दूषण लगाता है; ऐसे सेवकको तुरन्त त्याग करना

जो निष्कपटी १ धैर्यवान् २ कहा काम जल्दी करे ३
दयावान् ४ मधुर बोलनेवाला ५ अपने धनीकूं छोड
दूसरेके वश कभी होता नहीं ६ जिह्वा स्वाधीन

धैर्य १ क्रोध जीतना २ इंद्रियां जीतना ३ निर्म-
ता ४ करुणा ५ मधुरबोलना ६ मित्रसे बिगाड नहीं
रना ७ यह सात गुण सर्व लोकमें ऐश्वर्यकी प्रसिद्धी
रने वाले हैं.

अपने पास सदैव रहनेवाला, निर्दोषी, ऐसे पुरुषको
छलता है उसको जैसे सर्प घरमें रहनेसे निद्रा नहीं
ती, वैसे रात्रिको निद्रा नहीं आती है.

जो द्रव्य स्त्रियोंके हाथगया सो निःसंदेह जायगा,
न्मत्तों के हाथ तथा मूर्खोंके हाथ गया सोभी ऐसा
जानना.

हां स्त्रियोंका प्राबल्य है, कपटीके संग प्रसंगहै, बालक
राजा है, ऐसी जगहमें जो लोगरहते हैं सो,
पत्थरकी नावमें बैठके नदीमें जानेवाले डूबतेहैं,
डूबतेहैं.

पुतली डोरी हिलानेवालेके स्वाधीन होती है इसवास्ते तुझको जो बोलना होवे सो बोल मैं सुनता हूं.

विदुर कहता है हे राजा ! नहीं बोलनेके समयमें तो बृहस्पतिभी बोलता थका अज्ञानत्व पाके उसका अपमान होता है फिर हमारी तो क्या गिनती है, परंतु तू बुलवाता है इसवास्ते बोलता हूं श्रवण कर.

जिसके पाससे द्रव्य मिलता है वो प्रिय लगता है अथवा मृदु बोलता है सो प्रिय लगता है, बुद्धि देनेवाला प्रिय लगता है, आश्रय देनेवाला प्रिय लगता है, वोही उनके नहीं होनेसे अप्रिय लगता है, इसवास्ते इनको प्रिय कहना नहीं, कारण प्रिय है सोतो प्रियही है कदाचितभी अप्रिय होता नहीं.

जहां अपना दिल नहीं लगा उस जगह सद्गुण है तौभी दुर्गुण जैसेही दीखते हैं, और जिसकी अपने

जिसका स्नेहके तर्फ चित्त नहीं ४ चंचलवृ-
त्ति५अपनेको सयाना समझता है सो६.

दूसरे की सहायता वगैर द्रव्य प्राप्ति होती नहीं
वैसेही सहायक द्रव्य विना तथा अर्थ विना होती नहीं
इन दोनोंको एक ना एककी अपेक्षा है एक विना एक
सिद्ध होता नहीं.

इस लोकमें जन्म लेके पुरुषको क्या करना चाहि-
ये सो कहता हूं, स्वस्त्रीसे पुत्र उत्पन्न करना १ उनको
विद्याभ्यास कराना २ ऋण नहीं छोडके कुछ आजी-
विका करके देना३कन्या होय तो उसको अच्छे स्थानमें
देना ४पीछे पुत्रके स्वाधीन कारबार करके अपन अर-
ण्यमें तथा एकांत स्थानमें निरंतर परमेश्वरके ध्यानमें
लगना ५ तो वो भजन कैसा करना कि, जिसमें प्राणी
मात्रका हित होवै, अपनी आत्माको सुख होवै, शरी-
रको कष्ट पड़ा तोभी चिंता नहीं, केवल परमेश्वर प्रीत्य-

करानेवालाहै, उसको निरंतर यही उद्योग करना अच्छा लगताहै, तो ऐसेके दर्शनसेभी सुख नहीं होताहै जिसके संग रहनेसे बडा भय,जिसके पाससे द्रव्य लिया तो बडा दोष. और देनेसे बडी चिंता उत्पन्न होती है जो आपसमें फूटकराता है सो, लोभी, निर्लज्ज, शठ, घातकी और भी बडे बडे दोष आचरण करनेवाला है. तो ऐसे पुरुषके साथ मैत्री कभी नहीं करना, क्योंकि ऐसे के साथसे मैत्री टूटती है, जब अपनी करी प्रीति किंवा उपकार तथा इष्टत्व मुफ्तमें जाती है; और उलटा अपनी निंदा करनेको प्रवृत्त होता है, और अपना नाश करनेका उद्योग करता है; इसवास्ते मैत्री उत्तम-पुरुषके साथ करना; जो उससे अपना बिगाड होगया तौभी अपना अपकार नहीं करैगा

थोडाही अपराध होनेसे क्षमा करता नहीं ऐसे क्रूर नीच,पुरुषसे बुद्धिमान् पुरुषोंको बहुत दूर रहना चाहिये.

तारते हैं, नहीं तो वो डुबाते हैं, इसवास्ते पांडवोंके साथ भलाई रख, तौ शत्रुवोंसे अजीत होगा.

अपन श्रीमंत हैं इसवास्ते अपने पास कोई कुटुंब-मेंसे आया तो, अपन समर्थ होके, उसका दुःख दूर नहीं किया तो, वडा पातक लगता है. पांडव तेरे पुत्रोंको मारें, अथवा तेरे पुत्र पांडवोंको मारें तौभी दोनोही तर्फसे पश्चात्ताप तेरेहीको होवेगा; कारण दोनोंहीतेरे गोत्र हैं, सो विचार कर, आगू अकेले चारपाई पै बैठके संताप करना यह सबसे बुरा अन्याय है. जो पश्चात्ताप करके अब आगूसे सावधान होगा तो, आज तक तुम्हारेसे हुये अन्याय सर्व धो जायँगे.

जो अपन किसीका अपराध किया और वो संतुष्ट होके क्षमा किया, तो वो अपराध छूट जाता है सुज्ञानी उपदेश करी हुई वातोंका जिस २ प्रसंगपर अनुभव लेता है. उसके पांव बांके नहीं पडते.

बुद्धिवान होवे वह पहिले इतनी परीक्षा करके पीछे मित्रताई करना, कुल १ शील २ अपने अनुभवमें कैसा आता है, लोग इसको क्या कहते हैं, उसकी आकृति प्रत्यक्ष देखना, उसका सयानापना देखना पीछे उसके साथ मित्राई करना.

नम्रता अपकीर्तिका नाश करती है; पराक्रम अन्यथाका नाश करता है, क्षमा क्रोधका नाश करती है; धर्माचरण दुर्गुणका नाश करता है.

कुलकी परीक्षा करना तो इतना देखना, उपजीविकाका साधन, ठॉवठिकाणा, घरबार, आचरण, वस्त्रपात्र

बलात्कारसेभी एकाध दुष्ट मनोरथ उत्पन्न हुवा तो उसका तिरस्कार करना, यह संन्यासीकोभी कठिन है. सो गृहस्थकी तो क्या गिनती, परंतु ऐसे होके जो मन खैंचता है सो धन्य है.

बडे बडेकी संगत करता है सो विद्वान्, धार्मिक, हास्यमुख, बहुत इष्टमित्र होनेवाला, मधुर जिनका

है, एकवक्त छुडाये भये विषयपर फिर इंद्रियोंकी प्रीति करवाना ऐसा लज्जावाला काम दूसरा नहीं.

सर्व प्राणीमात्रसे नम्रता रखनी १ दूसरेपै दोष नहीं रखना २ क्षमा ३ धैर्य ४ मित्रत्वका अपमान नहीं करना ५ यह आयुष्यकी वृद्धि करनेवाले हैं.

कुमार्गमें कितना एक द्रव्य गया यह देखके जो साव-धान होताहै;और आगे अच्छा व्यवहार धंदा करके द्रव्य ढानेकी इच्छा करता है, तिसको समझदार जानना

आगे होवैगा ऐसा दुःखका आजहीसे उपाय बांधता , अभी दुःख होरहाहै उसको भोगे सिवाय सरता नहीं, ह समझके जो चलताहै और पीछे भोगा उस दुःखके नुभवको भूला नहीं, ऐसा जो मनुष्य तिसका सर्व ार्य सिद्ध होगा

काया, वाचा, मनसा, इनके जो जो कर्म्मों ऊपर नेरंतर अभ्यास रखता है तिस पुरुषको सो सो साध्यहै सवास्ते सर्वदा पुण्यकर्मकी भावना होने देना

त्र और कर्ण, पांच पांडव यह एक चित्तमें संपू-र्ण, समुद्र समेत पृथ्वीका पालक करें; तेरे पुत्र वन हैं जिसमें पांडव हैं सो सिंह हैं इसवास्ते तू वन सहित सिंहोंका छेदन मत कर, पांडव सिंह बगैर तेरे पुत्र वनका नाश होय सो नहीं होवै. क्योंकि सिंह बिना वन नहीं; वन बगैर सिंह नहीं. जिस वनमें सिंहोंकी वस्ती है उस वनकी रक्षा है, वनसे सिंहोंकी रक्षा है.

दुष्टबुद्धिका पुरुष दूसरेके सद्गुण जाननेकी इच्छा नहीं रखता, दोषमात्र का शोधन रखता है और सद्गु-णोंपै जान बूझके दोष लगाता है, उत्तम पुरुष अर्थ की इच्छा करने वास्ते पहिले स्वधर्म आचरते हैं स्वधर्म छोड़नेसे कुछभी अर्थ प्राप्ति नहीं जैसे स्वर्ग लोक छोडनेसे अमृत नहीं.

जिसका चित्त पापोंसे रहित होके ईश्वरके विषे लगा है उसने सब कुछ जाना. जिसने धर्म अर्थ काम

है, एकवक्त छुडाये भये विषयपर फिर इंद्रियोंकी प्रीति करवाना ऐसा लज्जावाला काम दूसरा नहीं.

सर्व प्राणीमात्रसे नम्रता रखनी १ दूसरेपै दोष नहीं रखना २ क्षमा ३ धैर्य ४ मित्रत्वका अपमान नहीं करना ५ यह आयुष्यकी वृद्धि करनेवाले हैं.

कुमार्गमें कितना एक द्रव्य गया यह देखके जो साव-धान होताहै; और आगे अच्छा व्यवहार धंदा करके द्रव्य वढानेकी इच्छा करता है, तिसको समझदार जानना.

आगे होवैगा ऐसा दुःखका आजहीसे उपाय बांधता है, अभी दुःख होरहाहै उसको भोगे सिवाय सरता नहीं, यह समझके जो चलताहै और पीछे भोगा उस दुःखके अनुभवको भूला नहीं, ऐसा जो मनुष्य तिसका सर्व कार्य सिद्ध होगा.

काया, वाचा, मनसा, इनके जो जो कर्म्मों ऊपर निरंतर अभ्यास रखता है तिस पुरुषको सो सो साध्यहै इसवास्ते सर्वदा पुण्यकर्मकी भावना होने देना

एकवक्त छुडाये भये विषयपर फिर इंद्रियोंकी प्रीति रखाना ऐसा लज्जावाला काम दूसरा नहीं

सर्व प्राणीमात्रसे नम्रता रखनी १ दूसरेपै दोष नहीं रखना २ क्षमा ३ धैर्य ४ मित्रत्वका अपमान नहीं करना ५ यह आयुष्यकी वृद्धि करनेवाले हैं.

कुमार्गमें कितना एक द्रव्य गया यह देखके जो सावधान होताहै;और आगे अच्छा व्यवहार धंदा करके द्रव्य वढानेकी इच्छा करता है, तिसको समझदार जानना.

आगे होवैगा ऐसा दुःखका आजहीसे उपाय बांधता है, अभी दुःख होरहाहै उसको भोगे सिवाय सरता नहीं, यह समझके जो चलताहै और पीछे भोगा उस दुःखके अनुभवको भूला नहीं, ऐसा जो मनुष्य तिसका सर्व कार्य सिद्ध होगा

काया, वाचा, मनसा, इनके जो जो कर्म्मों ऊपर निरंतर अभ्यास रखता है तिस पुरुषको सो सो साध्यहैं इसवास्ते सर्वदा पुण्यकर्मकी भावना होने देना.

ो वैद्य है परंतु औषधी नहीं. यहां यंत्र मंत्र होमादि
काभी उपाय नहीं.

सिद्ध १ सर्प २ अग्नि ३ अपनी जात ४ इनकी
वज्ञा करना नहीं, क्योंकि यह बहुत तेजस्वी होते
ं. महातेजरूपी अग्नि काष्ठमे गुप्त है तबतक कोई
नहीं जानते; परंतु वोही काष्ठ सिलगके प्रगट हुये पीछे
जिस काष्ठमें थी उस सहित सब वनको जलाती है, ऐसे
ही अपने कुलमें पांडव अग्नि समान तेजस्वी हैं, क्षमावंत
हैं, जिससे अपना सामर्थ्य दिखाते नहीं. काष्ठमे अग्नि
जैसे रहै है.

हे राजा ! तू अपने पुत्रों सहित वेलिरूप है और
पांडव सोही एक बडा वृक्ष है; सो बेली बडे वृक्षका आश्र-
य लिये बिना बढती नहीं. तेरे पुत्र दुर्योधनादिक सो वन
हैं और वनमें पांडव हैं सो सिंह हैं, ऐसा जानके भ्रममें
मत पड. सिंह वनहीन नाश पाता है; वन सिंह हीन

सबके साथ सीधा, सबका संकोच, ऐसेको अशक्त समझके कोई दुष्ट होता है सो उसके ऊपर उपद्रव करता है.

अत्यंत गुणवान्, उत्कृष्ट, दाता,अति शूर,अति प्रमाणिक, अति सयाना इनके पास लक्ष्मी स्थिर नहीं रहती है, क्योंकि गुणसे लक्ष्मीको बडी नहीं समझके द्रव्य खर्च करदेते हैं; परंतु लक्ष्मी अंधी है इसवास्ते अत्यंत गुणवान्केही पास रहना कि अत्यंत निर्गुणीके पास रहना सो इसका कुछ नियम नहीं, कहींभी रहती है

वेद पढनेका फल यह है कि, घरमें अग्निहोत्र होना चाहिये, शास्त्र पढनेका फल यह है कि, सद्गुणमें लगना चाहिये, स्त्रीका फल यह है कि संभोग और पुत्र प्राप्ति, द्रव्यका फल यह है कि त्याग और भोगना

अधर्मसे मिलाये हुये द्रव्यसे परलोकके साधनके लिये जो यज्ञ दानादिक करता है तिसको मरे पीछे यज्ञ

शांतिसे क्रोधको जीतना, साधुपनेसे असाधुको जीतना, दानसे कृपणको जीतना, सत्यसे असत्यको जीतना.

इन नवजनेका विश्वास कभी नहीं करना स्त्री १ व्यभिचारी पुरुष २ आलसी ३ भयातुर ४ बहुत क्रोधी ५ अभिमानी ६ चोर ७ कृतघ्नी ८ नास्तिक ९.

सर्वदा नम्र और बूढोंकी सेवा करता है, तिसकी कीर्ति १ आयुष्य २ यश ३ बल ४ यह चार बढते हैं.

हे राजा ! अत्यंत क्लेशसे अथवा अधर्मसे द्रव्य मिलाना, अथवा शत्रुके शरण जाके द्रव्य मिलाना, यह तेरेसे नहीं होवो.

निरक्षरपुरुष १ बांझस्त्री २ लडके तो बहुत हैं पर खानेको नहीं मिलता सो ३ राजाविना राज्य है सो ४ यह बात शोकके करानेवाली है

नित्य मार्ग चलनेसे पुरुष टूटता है. बाँध रखनेसे घोडा टूटता है. पुरुषके वियोगसे स्त्री टूटती है. पानीके झरनेसे पर्वत टूटता है. दुर्वचनसे मन टूटता है.

जिसने लेने देनेसे मित्रको जीता, युद्ध करके शत्रुको जीता, अन्न वस्त्रकी अच्छी तरह तजवीज करके स्त्रीको जीता, ऐसे पुरुषका जीना सफल है.

जिसके पास हजारों रुपये हैं, वोभी भूखे नहीं मरताहै, जिसके पास सैंकडों रुपये हैं, वोभी पेट भरता है जिसके पास कुछभी नहीं है, उसकाभी काम ईश्वर चलाता है, इसवास्ते हे धृतराष्ट्र ! तू बहुत इच्छा छोड जो परमेश्वर देवे उसीमें संतुष्टरह, क्योंकि सृष्टिपै जितना धन, धान्य, पशु आदि करके है सो सब एकको मिल-गया तौभी उसको पूरा होता नहीं; यह जिसके निश्चय होता है सो दुःख पाता नही हे राजा ! तेरेको वारंवार कहताहूं पांडव, कौरव तेरेको समान है, इसवास्ते दोनोंके ऊपर सम कृपा रखके राज्य पांडवोंको दे, जिसमें तेरा कल्याण होगा ॥

इति सप्तमोऽध्यायः ॥ ७ ॥

आती है ऐसी हामी भरना; यह तीनों विद्याके शत्रुहैं.

विद्याकी इच्छा करनेवालेको यह सात अवगुण-छोडना; आलस्य १ गर्व २ चंचलवृत्ति ३ वातें ४ मस्ती ५ मान ६ लोभपना ७ सुखकी इच्छा करनेवालेको विद्या कहां? विद्याकी इच्छा करनेवालेको सुख कहां? इस वास्ते सुखीको विद्या छोडना विद्यावानको सुख छोडना, सुख और विद्या दोनों एकत्र नहीं.

लकडियोंसे अग्नि तृप्त होता नहीं, नदियोंसे समुद्र तृप्त होता नहीं, सब प्राणी मात्रसे मृत्यु तृप्त होती नहीं, पुरुषोंसे छिनाल स्त्री तृप्त होती नहीं

आशा. धैर्यका नाश करती है, काल; पदार्थमात्रका नाश करता है, क्रोध. लक्ष्मीका नाश करता है, कृपण-ता. कीर्तिका नाश करती है, अपालना पशुवोंका नाश करता है.

हे पिता! सब पुण्यकर्मोंमें श्रेष्ठ, सो मैं तुमसे कहता हूं सो मनमें दृढ रक्खो, कामवास्ते अथवा लोभवास्ते

अथवा कीडे अथवा पक्षी खाते हैं; द्रव्य दूसरे भोगते हैं; पुण्य अथवा पाप मात्र यह दो उसके संग चलते हैं, इसवास्ते पुण्यकी पूंजी जोडके संगलेना यह अच्छी बात है, इस मृत्युलोकके ऊपर जैसे स्वर्ग है वैसे ही नीचे नरक है इसवास्ते हे राजा ! मेरी इच्छा यह है कि नरकका स्पर्श मत कर.

यह मेरा उपदेश सुनैगा तो इस लोकमें यश पावैगा और यहां तथा परलोकमें तेरेको भय नहीं होवेगा. जीव है सो एक नदी है, जिस ठिकाने तीर्थ सो धर्म है, सत्य सो जल है, धैर्य सो तट है, दया सो लहरें हैं, ऐसी नदीमें स्नान किया सो पवित्र हुवा जो सदा निर्लोभी सोही पुण्यवान् समझना.

हे राजा ! काम क्रोधादिक सोही एक सरोवर, और श्रोत्र, त्वचा, चक्षु, जिह्वा, घ्राण, यह पंचेंद्रियरूपी जल है, ऐसा जो यह संसाररूपी सरोवर. तिसमें धैर्यरूपी नौका बनाके. जन्म मृत्युसे तिरजाने

द्रव्यका विभाग देताहै, यज्ञ यागादिक पुण्यकर्म करता है, ऐसा वैश्य मरे पीछे स्वर्गमें सुख भोगता है.

ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य इनोंकी यथायोग्य सेवा करता है, ऐसा जो शूद्र सो निष्पाप होके देह छूटे पीछे स्वर्गमें सुख भोगता है, यह चारों वर्णका धर्म है हे राजा ! सो तुझसे कहा अब इसका कारण कहता हूं.

राज्य विना पांडवोंके हाथमें दिये क्षत्रिय धर्म होनेका नहीं, इसवास्ते तेरेको राजनीति प्रमाणे देना योग्य है सो राज्य देके उनका स्वधर्म रख. ऐसा तेरा सर्व मनोरथ पूर्ण होके, अंतमें जो नित्य, जिसमें संताप नहीं वो पायेसे जन्म मरणका आवागमन टलता है ऐसा सुख सो पावैगा

इस प्रकार महाबुद्धिमान्, परमसाधु, पुण्यकीर्ति विदुरने राजा धृतराष्ट्रको राजधर्म राजनीति कही है, सो श्री महाभारतमें उद्योगपर्वमें ३३ से लेकर ४ अध्याय पर्यंत, श्रीवेदव्यासजीने संक्षेप रीतिसे व

द्रव्यका विभाग देताहै, यज्ञ यागादिक पुण्यकर्म करता है. ऐसा वैश्य मरे पीछे स्वर्गमें सुख भोगता है.

ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य इनोंकी यथायोग्य सेवा करता है, ऐसा जो शूद्र सो निष्पाप होके देह छूटे पीछे स्वर्गमें सुख भोगता है, यह चारों वर्णका धर्म है. हे राजा ! सो तुझसे कहा अब इसका कारण कहता हूं.

राज्य विना पांडवोंके हाथमें दिये क्षत्रिय धर्म होनेका नहीं. इसवास्ते तेरेको राजनीति प्रमाणे देना योग्य है सो राज्य देके उनका स्वधर्म रख. ऐसा तेरा सर्व मनोरथ पूर्ण होके, अंतमें जो नित्य, जिसमें संताप नहीं वो पायेसे जन्म मरणका आवागमन टलता है ऐसा सुख सो पावैगा

इस प्रकार महाबुद्धिमान्, परमसाधु, पुण्यकीर्ति, विदुरने राजा धृतराष्ट्रको राजधर्म राजनीति कही है, सो श्री महाभारतमें उद्योगपर्वमें ३३ से लेकर ४० अध्याय पर्यंत, श्रीवेदव्यासजीने संक्षेप रीतिसे

द्रव्यका विभाग देताहै, यज्ञ यागादिक पुण्यकर्म करता है, ऐसा वैश्य मरे पीछे स्वर्गमें सुख भोगता है.

ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य इनोंकी यथायोग्य सेवा करता है, ऐसा जो शूद्र सो निष्पाप होके देह छूटे पीछे स्वर्गमें सुख भोगता है. यह चारों वर्णका धर्म है. हे राजा ! सो तुझसे कहा अब इसका कारण कहता हूं.

राज्य विना पांडवोंके हाथमें दिये क्षत्रिय धर्म होनेका नहीं. इसवास्ते तेरेको राजनीति प्रमाणे देना योग्य है सो राज्य देके उनका स्वधर्म रख. ऐसा तेरा सर्व मनोरथ पूर्ण होके, अंतमें जो नित्य, जिसमें संताप नहीं वो पायेसे जन्म मरणका आवागमन टलता है ऐसा सुख सो पावैगा

इस प्रकार महाबुद्धिमान्, परमसाधु, पुण्यकीर्ति, विदुरने राजा धृतराष्ट्रको राजधर्म राजनीति कही है, सो श्री महाभारतमें उद्योगपर्वमें ३३ से लेकर ४० अध्याय पर्यंत. श्रीवेदव्यासजीने संक्षेप ...

द्रव्यका विभाग देताहै, यज्ञ यागादिक पुण्यकर्म करता है, ऐसा वैश्य मरे पीछे स्वर्गमें सुख भोगता है.

ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य इनोंकी यथायोग्य सेवा करता है, ऐसा जो शूद्र सो निष्पाप होके देह छूटे पीछे स्वर्गमें सुख भोगता है, यह चारों वर्णका धर्म है. हे राजा ! सो तुझसे कहा अब इसका कारण कहता हूं.

राज्य बिना पांडवोंके हाथमें दिये क्षत्रिय धर्म होनेका नहीं. इसवास्ते तेरेको राजनीति प्रमाणे देना योग्य है सो राज्य देके उनका स्वधर्म रख. ऐसा तेरा सर्व मनोरथ पूर्ण होके, अंतमें जो नित्य, जिसमें संताप नहीं वो पायेसे जन्म मरणका आवागमन टलता है ऐसा सुख सो पावेगा

इस प्रकार महाबुद्धिमान्, परमसाधु, पुण्यकीर्ति, विदुरने राजा धृतराष्ट्रको राजधर्म राजनीति कही है, सो श्री महाभारतमें उद्योगपर्वमें ३३ से लेकर ४० अध्याय पर्यंत. श्रीवेदव्यासजीने संक्षेप रीतिसे वर्णन

द्व्यका विभाग देताहै, यज्ञ यागादिक पुण्यकर्म करता है, ऐसा वैश्य मरे पीछे स्वर्गमें सुख भोगता है.

ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य इनोंकी यथायोग्य सेवा करता है, ऐसा जो शूद्र सो निष्पाप होके देह छूटे पीछे स्वर्गमें सुख भोगता है, यह चारों वर्णका धर्म है. हे राजा ! सो तुझसे कहा अब इसका कारण कहता हूं.

राज्य बिना पांडवोंके हाथमें दिये क्षत्रिय धर्म होनेका नहीं. इसवास्ते तेरेको राजनीति प्रमाणे देना योग्य है सो राज्य देके उनका स्वधर्म रख. ऐसा तेरा सर्व मनोरथ पूर्ण होके, अंतमे जो नित्य, जिसमें संताप नहीं वो पायेसे जन्म मरणका आवागमन टलता है ऐसा सुख सो पावेगा

इस प्रकार महाबुद्धिमान्, परमसाधु, पुण्यकीर्ति, विदुरने राजा धृतराष्ट्रको राजधर्म राजनीति कही है, सो श्री महाभारतमें उद्योगपर्वमें ३३ से लेकर ४० अध्याय पर्यंत. श्रीवेदव्यासजीने संक्षेप रीतिसे

यक्षप्रश्न।

वैशंपायन ऋषि जनमेजय राजाको कहता है. कोई एक समयमें धर्म, भीम, अर्जुन, नकुल, सहदेव यह पांचों पांडव द्वैत वनमें रहते थे, वहां एक ब्राह्मण आके उन्होंको बोला कि, हे महाराज ! मेरी अग्निहोत्रकी अरणी अर्थात् (अग्नि सिलगानेकी लकडियां) वृक्षके ऊपर रक्खीथीं, सो वहांसे एक हरिण लेके भग गया, सो उसका शोध करके अरणी मेरेको लायदो, नहीं तो अ-ग्निहोत्रका भंग होताहै. ऐसे ब्राह्मणका वचन कानोंमें पडतेही, पाँचों पांडवोंने धनुष बाण लेके सर्व वन ढूंढा परंतु हरिणका पता लगा नहीं, और क्षुधा तृषासे बहुत पीडायमान होके एक वटके वृक्षके नीचे बैठे, तब धर्मराज बोला, नकुल! तृषासे प्राण व्याकुल होता है सो कहींसेभी पानी लाव, ऐसे सुनतेही नकुलने एक बडे वृक्षपै चढके देखा तो एक तालाव दूरसे दृष्टिमे आया, पीछे वो शीघ्रही वहां जाके पानी भरनेको लगा,

ो बोल ! मैं यथाज्ञानसे उत्तर देवूंगा, सुनके यक्ष प्रश्न करता है, धर्मराज उत्तर देता है.

प्रश्न ब्राह्मणको बडापन किससे मिलता है ?

उत्तर॰ वेदशास्त्र जाननेसे.

प्र॰ सुकीर्ति किससे मिलती है ?

उ॰ इन्द्रियां स्वाधीन करनेसे.

प्र॰ इच्छा किया हुवा फल काहेसे मिलता है ?

उ॰ तपस्यासे.

प्र॰ सुबुद्धि किससे मिलतीहै?

उ॰ वृद्धोंकी सेवा करनेसे.

प्र॰ ब्राह्मणका दैवत कौन ? उ॰ वेद.

प्र॰ उनका परंपरागत धर्म कौनसा? उ॰-तपश्चर्या.

प्र॰ उनका मरन कौनसा?

उ॰ देहादिकके विषे दृढ अभिमान.

प्र॰ उनको पाप कौनसा?

प्र० पृथ्वीसे बडा कौन. उ० माता.
प्र० आकाशसे ऊंचा कौन; उ० पिता.
प्र० तृणसे अधिक अंकुर आके बढता है सो कौन ?
उ० चिंता.
प्र० पवनसे ज्यादा चपल कौन, उ० मन.
प्र० हृदय किसको नहीं, उ० पत्थरको
प्र० अपने वेगसे बढै सो कौन. उ० नदी.
प्र० कुटुंब वत्सलका मित्र कौन, उ० द्रव्य.
प्र० गृहस्थका मित्र कौन. उ० भार्या.
प्र० रोगीका मित्र कौन, उ० औषध.
प्र० मृत्युका मित्र कौन; उ० दान; धर्म
प्र० इस लोकमें अमृत कौनसा, उ० दूध.
प्र० ठंढीका औषध कौनसा. उ० अग्नि.
प्र० सर्वका स्थान कौनसा. उ० पृथ्वी.
प्र० धर्मका मुख्य स्थान कौनसा, उ० दक्षता.
प्र० यशका मुख्य स्थान कौनसा, उ० दान.

प्र० मैत्री किसके संग हुई घटती नहीं है,

उ० साधुके संग.

प्र० क्या छोडनेसे प्रिय होता है, उ० मान.

प्र० क्या छोडनेसे शोक नहीं होता है, उ० क्रोध.

प्र० क्या छोडनेसे सम्पत्तिवान् होता है,

उ० इच्छा छोडनेसे.

प्र० याचकोंको किसवास्ते देते हैं;

उ० पुंण्य प्राप्ति वास्ते.

प्र० नटनर्तकोंको किसवास्ते देते हैं,

उ० लौकिकके वास्ते.

प्र० सेवकोंको किसवास्ते देना,

उ० उन्होंका संसार चलाने वास्ते.

प्र० राजाको किसवास्तेदेना,

उ० अपना भय मिटनेको.

प्र० लोग किसमें लिपटे हुये हैं

उ० अज्ञानमें.

प्र० आर्जव कौनसा,

उ० सर्वके ऊपर समान चित्त रखना.

प्र० पुरुषको अजीत शत्रु कौनसा, उ० क्रोध.

प्र० अतिशय बडी व्याधि कौनसी, उ० लोभ.

प्र० साधु कौनसा,

उ० प्राणी मात्रका हित करना.

प्र० असाधु कौनसा, उ० निर्दयी.

प्र० मोह कौनसा, उ० जिस कारणसे धर्म नहीं समझा जाता सो.

प्र० मान कौनसा, उ० अपनही बडे हैं ऐसा समझता है सो.

प्र० आलस्य कौनसा,

उ० अपना स्वहित नहीं देखना सो

प्र० शोक करने योग्य क्या है, उ० अज्ञान

प्र० स्थिर क्या, उ० धर्मकी स्थिरता.

प्र० धैर्य कौनसा,

उ० इन्द्रियां स्वाधीन करना

तारते हैं, नहीं तो वो डुबाते हैं, इसवास्ते पांडवोंके साथ भलाई रख, तौ शत्रुवोंसे अजीत होगा.

अपन श्रीमंत हैं इसवास्ते अपने पास कोई कुटुंब-मेंसे आया तो, अपन समर्थ होके, उसका दुःख दूर नहीं किया तो, वडा पातक लगता है. पांडव तेरे पुत्रोंको मारें, अथवा तेरे पुत्र पांडवोंको मारें तौभी दोनोही तर्फसे पश्चात्ताप तेरेहीको होवेगा; कारण दो-नोंहीतेरे गोत्र हैं, सो विचार कर, आगू अकेले चारपाई पै बैठके संताप करना यह सबसे बुरा अन्याय है. जो पश्चात्ताप करके अब आगूसे सावधान होगा तो, आज तक तुम्हारेसे हुये अन्याय सर्व धो जायँगे.

जो अपन किसीका अपराध किया और वो संतुष्ट होके क्षमा किया, तो वो अपराध छूट जाता है सुज्ञानी उपदेश करी हुई वातोंका जिस २ प्रसंगपर अनभव लेता है. उसके पांव बांके नहीं पडते.

बुद्धिवान होवे वह पहिले इतनी परीक्षा करके पीछे मित्रताई करना, कुल १ शील २ अपने अनुभवमें कैसा आता है, लोग इसको क्या कहते हैं, उसकी आकृति प्रत्यक्ष देखना, उसका सयानापना देखना पीछे उसके साथ मित्राई करना.

नम्रता अपकीर्तिका नाश करती है; पराक्रम अन्यथाका नाश करता है, क्षमा क्रोधका नाश करती है; धर्माचरण दुर्गुणका नाश करता है.

कुलकी परीक्षा करना तो इतना देखना, उपजीविकाका साधन, ठॉवठिकाणा, घरबार, आचरण, वस्त्रपात्र

बलात्कारसेभी एकाध दुष्ट मनोरथ उत्पन्न हुवा तो उसका तिरस्कार करना, यह संन्यासीकोभी कठिन है. सो गृहस्थकी तो क्या गिनती, परंतु ऐसे होके जो मन खैंचता है सो धन्य है.

बडे बडेकी संगत करता है सो विद्वान्, धार्मिक, हास्यमुख, बहुत इष्टमित्र होनेवाला, मधुर जिनका

है, एकवक्त छुडाये भये विषयपर फिर इंद्रियोंकी प्रीति करवाना ऐसा लज्जावाला काम दूसरा नहीं.

सर्व प्राणीमात्रसे नम्रता रखनी १ दूसरेपै दोष नहीं रखना २ क्षमा ३ धैर्य ४ मित्रत्वका अपमान नहीं करना ५ यह आयुष्यकी वृद्धि करनेवाले हैं.

कुमार्गमें कितना एक द्रव्य गया यह देखके जो साव-धान होताहै;और आगे अच्छा व्यवहार धंदा करके द्रव्य बढानेकी इच्छा करता है, तिसको समझदार जानना

आगे होवैगा ऐसा दुःखका आजहीसे उपाय बांधता है, अभी दुःख होरहाहै उसको भोगे सिवाय सरता नहीं, यह समझके जो चलताहै और पीछे भोगा उस दुःखके अनुभवको भूला नहीं, ऐसा जो मनुष्य तिसका सर्व कार्य सिद्ध होगा

काया, वाचा, मनसा, इनके जो जो कर्म्मों ऊपर निरंतर अभ्यास रखता है तिस पुरुषको सो सो साध्यहै इसवास्ते सर्वदा पुण्यकर्मकी भावना होने देना

है, एकवक्त छुडाये भये विषयपर फिर इंद्रियोंकी प्रीति करवाना ऐसा लज्जावाला काम दूसरा नहीं.

सर्व प्राणीमात्रसे नम्रता रखनी १ दूसरेपै दोष नहीं रखना २ क्षमा ३ धैर्य ४ मित्रत्वका अपमान नहीं करना ५ यह आयुष्यकी वृद्धि करनेवाले हैं.

कुमार्गमें कितना एक द्रव्य गया यह देखके जो साव- धान होताहै;और आगे अच्छा व्यवहार धंदा करके द्रव्य बढानेकी इच्छा करता है, तिसको समझदार जानना.

आगे होवैगा ऐसा दुःखका आजहीसे उपाय बांधता है, अभी दुःख होरहाहै उसको भोगे सिवाय सरता नहीं, यह समझके जो चलताहै और पीछे भोगा उस दुःखके अनुभवको भूला नहीं, ऐसा जो मनुष्य तिसका सर्व कार्य सिद्ध होगा

काया, वाचा, मनसा, इनके जो जो कर्म्मों ऊपर निरंतर अभ्यास रखता है तिस पुरुषको सो सो साध्यहै इसवास्ते सर्वदा पुण्यकर्मकी भावना होने देना

ई, एकवक्त छुडाये भये विषयपर फिर इंद्रियोंकी प्रीति करवाना ऐसा लज्जावाला काम दूसरा नहीं

सर्व प्राणीमात्रसे नम्रता रखनी १ दूसरेपै दोष नहीं रखना २ क्षमा ३ धैर्य ४ मित्रत्वका अपमान नहीं करना ५ यह आयुष्यकी वृद्धि करनेवाले हैं.

कुमार्गमें कितना एक द्रव्य गया यह देखके जो साव-धान होताहै;और आगे अच्छा व्यवहार धंदा करके द्रव्य बढानेकी इच्छा करता है, तिसको समझदार जानना.

आगे होवैगा ऐसा दुःखका आजहीसे उपाय बांधता है, अभी दुःख होरहाहै उसको भोगे सिवाय सरता नहीं, यह समझके जो चलताहै और पीछे भोगा उस दुःखके अनुभवको भूला नहीं, ऐसा जो मनुष्य तिसका सर्व कार्य सिद्ध होगा

काया, वाचा, मनसा, इनके जो जो कर्म्मों ऊपर निरंतर अभ्यास रखता है तिस पुरुषको सो सो साध्यहैं इसवास्ते सर्वदा पुण्यकर्मकी भावना होने देना.

सबके साथ सीधा, सबका संकोच, ऐसेको अशक्त समझके कोई दुष्ट होता है सो उसके ऊपर उपद्रव करता है.

अत्यंत गुणवान्, उत्कृष्ट, दाता,अति शूर,अति प्रमाणिक, अति सयाना इनके पास लक्ष्मी स्थिर नहीं रहती है, क्योंकि गुणसे लक्ष्मीको बडी नहीं समझके द्रव्य खर्च करदेते हैं; परंतु लक्ष्मी अंधी है इसवास्ते अत्यंत गुणवान्केही पास रहना कि अत्यंत निर्गुणीके पास रहना सो इसका कुछ नियम नहीं, कहींभी रहती है

वेद पढनेका फल यह है कि, घरमें अग्निहोत्र होना चाहिये, शास्त्र पढनेका फल यह है कि, सद्गुणमें लगना चाहिये, स्त्रीका फल यह है कि संभोग और पुत्र प्राप्ति, द्रव्यका फल यह है कि त्याग और भोगना

अधर्मसे मिलाये हुये द्रव्यसे परलोकके साधनके लिये जो यज्ञ दानादिक करता है तिसको मरे पीछे यज्ञ

शांतिसे क्रोधको जीतना, साधुपनेसे असाधुको जीतना, दानसे कृपणको जीतना,सत्यसे असत्यको जीतना.

इन नवजनेका विश्वास कभी नहीं करना स्त्री १ व्यभिचारी पुरुष २ आलसी ३ भयातुर ४ बहुत क्रोधी ५ अभिमानी ६ चोर ७ कृतघ्नी ८ नास्तिक ९.

सर्वदा नम्र और बूढोंकी सेवा करता है, तिसकी कीर्ति १ आयुष्य २ यश ३ बल ४ यह चार बढते हैं.

हे राजा ! अत्यंत क्लेशसे अथवा अधर्मसे द्रव्य मिलाना, अथवा शत्रुके शरण जाके द्रव्य मिलाना, यह तेरेसे नहीं होवो.

निरक्षरपुरुष १ बांझस्त्री २ लडके तो बहुत हैं पर खानेको नहीं मिलता सो ३ राजाविना राज्य है सो ४ यह बात शोकके करानेवाली है

नित्य मार्ग चलनेसे पुरुष टूटता है. बांध रखनेसे घोडा टूटता है. पुरुषके वियोगसे स्त्री टूटती है. पानीके झरनेसे पर्वत टूटता है. दुर्वचनसे मन टूटता है.

जिसने लेने देनेसे मित्रको जीता, युद्ध करके शत्रुको जीता, अन्न वस्त्रकी अच्छी तरह तजवीज करके स्त्रीको जीता, ऐसे पुरुषका जीना सफल है.

जिसके पास हजारों रुपये हैं, वोभी भूखे नहीं मरता है, जिसके पास सैंकडों रुपये हैं, वोभी पेट भरता है जिसके पास कुछभी नहीं है, उसकाभी काम ईश्वर चलाता है, इसवास्ते हे धृतराष्ट्र ! तू बहुत इच्छा छोड जो परमेश्वर देवे उसीमें संतुष्टरह, क्योंकि सृष्टिपै जितना धन, धान्य, पशु आदि करके है सो सब एकको मिल-गया तौभी उसको पूरा होता नहीं; यह जिसके निश्चय होता है सो दुःख पाता नही हे राजा ! तेरेको वारंवार कहताहूं पांडव, कौरव तेरेको समान है, इसवास्ते दोनोंके ऊपर सम कृपा रखके राज्य पांडवोंको दे, जिसमें तेरा कल्याण होगा ॥

इति सप्तमोऽध्यायः ॥ ७ ॥

आती है ऐसी हामी भरना; यह तीनों विद्याके शत्रुहैं.

विद्याकी इच्छा करनेवालेको यह सात अवगुण-छोडना; आलस्य १ गर्व २ चंचलवृत्ति ३ वातें ४ मस्ती ५ मान ६ लोभपना ७ सुखकी इच्छा करनेवालेको विद्या कहां? विद्याकी इच्छा करनेवालेको सुख कहां? इस वास्ते सुखीको विद्या छोडना विद्यावानको सुख छोडना, सुख और विद्या दोनों एकत्र नहीं.

लकडियोंसे अग्नि तृप्त होता नहीं, नदियोंसे समुद्र तृप्त होता नहीं, सब प्राणी मात्रसे मृत्यु तृप्त होती नहीं, पुरुषोंसे छिनाल स्त्री तृप्त होती नहीं

आशा. धैर्यका नाश करती है, काल; पदार्थमात्रका नाश करता है, क्रोध. लक्ष्मीका नाश करता है, कृपण-ता. कीर्तिका नाश करती है, अपालना पशुवोंका नाश करता है.

हे पिता! सब पुण्यकर्मोंमें श्रेष्ठ, सो मैं तुमसे कहता हूं सो मनमें दृढ रक्खो, कामवास्ते अथवा लोभवास्ते

अथवा कीडे अथवा पक्षी खाते हैं; द्रव्य दूसरे भोगते हैं; पुण्य अथवा पाप मात्र यह दो उसके संग चलते हैं, इसवास्ते पुण्यकी पूंजी जोडके संगलेना यह अच्छी बात है, इस मृत्युलोकके ऊपर जैसे स्वर्ग है वैसे ही नीचे नरक है इसवास्ते हे राजा ! मेरी इच्छा यह है कि नरकका स्पर्श मत कर.

यह मेरा उपदेश सुनैगा तो इस लोकमें यश पावैगा और यहां तथा परलोकमें तेरेको भय नहीं होवेगा. जीव है सो एक नदी है, जिस ठिकाने तीर्थ सो धर्म है, सत्य सो जल है, धैर्य सो तट है, दया सो लहरें हैं, ऐसी नदीमें स्नान किया सो पवित्र हुवा जो सदा निर्लोभी सोही पुण्यवान् समझना.

हे राजा ! काम क्रोधादिक सोही एक सरोवर, और श्रोत्र, त्वचा, चक्षु, जिह्वा, घ्राण, यह पंचेंद्रियरूपी जल है, ऐसा जो यह संसाररूपी सरोवर. तिसमें धैर्यरूपी नौका बनाके. जन्म मृत्युसे तिरजावे

द्रव्यका विभाग देताहै, यज्ञ यागादिक पुण्यकर्म करता है, ऐसा वैश्य मरे पीछे स्वर्गमें सुख भोगता है.

ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य इनोंकी यथायोग्य सेवा करता है, ऐसा जो शूद्र सो निष्पाप होके देह छूटे पीछे स्वर्गमें सुख भोगता है, यह चारों वर्णका धर्म है हे राजा ! सो तुझसे कहा अब इसका कारण कहता हूं.

राज्य विना पांडवोंके हाथमें दिये क्षत्रिय धर्म होनेका नहीं, इसवास्ते तेरेको राजनीति प्रमाणे देना योग्य है सो राज्य देके उनका स्वधर्म रख. ऐसा तेरा सर्व मनोरथ पूर्ण होके, अंतमें जो नित्य, जिसमें संताप नहीं वो पायेसे जन्म मरणका आवागमन टलता है ऐसा सुख सो पावैगा

इस प्रकार महाबुद्धिमान्, परमसाधु, पुण्यकीर्ति, विदुरने राजा धृतराष्ट्रको राजधर्म राजनीति कही है, सो श्री महाभारतमें उद्योगपर्वमें ३३ से लेकर ४० अध्याय पर्यंत, श्रीवेदव्यासजीने संक्षेप रीतिसे व

द्रव्यका विभाग देताहै, यज्ञ यागादिक पुण्यकर्म करता है, ऐसा वैश्य मरे पीछे स्वर्गमें सुख भोगता है.

ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य इनोंकी यथायोग्य सेवा करता है, ऐसा जो शूद्र सो निष्पाप होके देह छूटे पीछे स्वर्गमें सुख भोगता है, यह चारों वर्णका धर्म है. हे राजा ! सो तुझसे कहा अब इसका कारण कहता हूं.

राज्य विना पांडवोंके हाथमें दिये क्षत्रिय धर्म होनेका नहीं, इसवास्ते तेरेको राजनीति प्रमाणे देना योग्य है सो राज्य देके उनका स्वधर्म रख. ऐसा तेरा सर्व मनोरथ पूर्ण होके, अंतमें जो नित्य, जिसमें संताप नहीं वो पायेसे जन्म मरणका आवागमन टलता है ऐसा सुख सो पावैगा

इस प्रकार महाबुद्धिमान्, परमसाधु, पुण्यकीर्ति, विदुरने राजा धृतराष्ट्रको राजधर्म राजनीति कही है, सो श्री महाभारतमें उद्योगपर्वमें ३३ से लेकर ४० अध्याय पर्यंत, श्रीवेदव्यासजीने संक्षेप रीतिसे

द्रव्यका विभाग देताहै, यज्ञ यागादिक पुण्यकर्म करता है, ऐसा वैश्य मरे पीछे स्वर्गमें सुख भोगता है.

ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य इनोंकी यथायोग्य सेवा करता है, ऐसा जो शूद्र सो निष्पाप होके देह छूटे पीछे स्वर्गमें सुख भोगता है. यह चारों वर्णका धर्म है. हे राजा ! सो तुझसे कहा अब इसका कारण कहता हूं.

राज्य विना पांडवोंके हाथमें दिये क्षत्रिय धर्म होनेका नहीं. इसवास्ते तेरेको राजनीति प्रमाणे देना योग्य है सो राज्य देके उनका स्वधर्म रख. ऐसा तेरा सर्व मनोरथ पूर्ण होके, अंतमें जो नित्य, जिसमें संताप नहीं वो पायेसे जन्म मरणका आवागमन टलता है ऐसा सुख सो पावैगा

इस प्रकार महाबुद्धिमान्, परमसाधु, पुण्यकीर्ति, विदुरने राजा धृतराष्ट्रको राजधर्म राजनीति कही है, सो श्री महाभारतमें उद्योगपर्वमें ३३ से लेकर ४० अध्याय पर्यंत. श्रीवेदव्यासजीने संक्षेप रीतिसे

द्रव्यका विभाग देताहै, यज्ञ यागादिक पुण्यकर्म करता है, ऐसा वैश्य मरे पीछे स्वर्गमें सुख भोगता है.

ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य इनोंकी यथायोग्य सेवा करता है, ऐसा जो शूद्र सो निष्पाप होके देह छूटे पीछे स्वर्गमें सुख भोगता है, यह चारों वर्णका धर्म है. हे राजा ! सो तुझसे कहा अब इसका कारण कहता हूं.

राज्य बिना पांडवोंके हाथमें दिये क्षत्रिय धर्म होनेका नहीं. इसवास्ते तेरेको राजनीति प्रमाणे देना योग्य है सो राज्य देके उनका स्वधर्म रख. ऐसा तेरा सर्व मनोरथ पूर्ण होके, अंतमें जो नित्य, जिसमें संताप नहीं वो पायेसे जन्म मरणका आवागमन टलता है ऐसा सुख सो पावैगा

इस प्रकार महाबुद्धिमान्, परमसाधु, पुण्यकीर्ति, विदुरने राजा धृतराष्ट्रको राजधर्म राजनीति कही है, सो श्री महाभारतमें उद्योगपर्वमें ३३ से लेकर ४० अध्याय पर्यंत. श्रीवेदव्यासजीने संक्षेप रीतिसे वर्णन

द्रव्यका विभाग देताहै, यज्ञ यागादिक पुण्यकर्म करता है, ऐसा वैश्य मरे पीछे स्वर्गमें सुख भोगता है.

ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य इनोंकी यथायोग्य सेवा करता है, ऐसा जो शूद्र सो निष्पाप होके देह छूटे पीछे स्वर्गमें सुख भोगता है, यह चारों वर्णका धर्म है. हे राजा ! सो तुझसे कहा अब इसका कारण कहता हूं.

राज्य विना पांडवोके हाथमें दिये क्षत्रिय धर्म होनेका नहीं. इसवास्ते तेरेको राजनीति प्रमाणे देना योग्य है सो राज्य देके उनका स्वधर्म रख. ऐसा तेरा सर्व मनोरथ पूर्ण होके, अंतमे जो नित्य, जिसमें संताप नहीं वो पायेसे जन्म मरणका आवागमन टलता है ऐसा सुख सो पावेगा

इस प्रकार महाबुद्धिमान्, परमसाधु, पुण्यकीर्ति, विदुरने राजा धृतराष्ट्रको राजधर्म राजनीति कही है, सो श्री महाभारतमें उद्योगपर्वमें ३३ से लेकर ४० अध्याय पर्यंत. श्रीवेदव्यासजीने संक्षेप रीतिसे

यक्षप्रश्न।

वैशंपायन ऋषि जनमेजय राजाको कहता है. कोई एक समयमें धर्म, भीम, अर्जुन, नकुल, सहदेव यह पांचों पांडव द्वैत वनमें रहते थे, वहां एक ब्राह्मण आके उन्होंको बोला कि, हे महाराज ! मेरी अग्निहोत्रकी अरणी अर्थात् (अग्नि सिलगानेकी लकडियां) वृक्षके ऊपर रक्खीथीं, सो वहांसे एक हरिण लेके भग गया, सो उसका शोध करके अरणी मेरेको लायदो, नहीं तो अ-ग्निहोत्रका भंग होताहे. ऐसे ब्राह्मणका वचन कानोंमें पडतेही, पाँचों पांडवोंने धनुष बाण लेके सर्व वन ढूंढा परंतु हरिणका पता लगा नहीं, और क्षुधा तृषासे बहुत पीडायमान होके एक वटके वृक्षके नीचे बैठे, तब धर्मराज बोला, नकुल! तृषासे प्राण व्याकुल होता है सो कहींसेभी पानी लाव, ऐसे सुनतेही नकुलने एक बडे वृक्षपै चढके देखा तो एक तालाव दूरसे दृष्टिमे आया, पीछे वो शीघ्रही वहां जाके पानी भरनेको लगा,

ो बोल ! मैं यथाज्ञानसे उत्तर देवूंगा, सुनके यक्ष प्रश्न करता है, धर्मराज उत्तर देता है.

प्रश्न ब्राह्मणको बडापन किससे मिलता है ?

उत्तर० वेदशास्त्र जाननेसे.

प्र० सुकीर्ति किससे मिलती है ?

उ० इन्द्रियां स्वाधीन करनेसे.

प्र० इच्छा किया हुवा फल काहेसे मिलता है ?

उ० तपस्यासे.

प्र० सुबुद्धि किससे मिलतीहै?

उ० वृद्धोंकी सेवा करनेसे.

प्र० ब्राह्मणका दैवत कौन ? उ० वेद.

प्र० उनका परंपरागत धर्म कौनसा? उ०-तपश्चर्या.

प्र० उनका मरन कौनसा?

उ० देहादिकके विषे दृढ अभिमान.

प्र० उनको पाप कौनसा?

प्र० पृथ्वीसे वडा कौन. उ० माता.

प्र० आकाशसे ऊंचा कौन; उ० पिता.

प्र० तृणसे अधिक अंकुर आके बढता है सो कौन ?
उ० चिंता.

प्र० पवनसे ज्यादा चपल कौन, उ० मन.

प्र० हृदय किसको नहीं, उ० पत्थरको

प्र० अपने वेगसे बढै सो कौन. उ० नदी.

प्र० कुटुंब वत्सलका मित्र कौन, उ० द्रव्य.

प्र० गृहस्थका मित्र कौन. उ० भार्या.

प्र० रोगीका मित्र कौन, उ० औषध.

प्र० मृत्युका मित्र कौन; उ० दान; धर्म

प्र० इस लोकमें अमृत कौनसा, उ० दूध.

प्र० ठंढीका औषध कौनसा. उ० अग्नि.

प्र० सर्वका स्थान कौनसा. उ० पृथ्वी.

प्र० धर्मका मुख्य स्थान कौनसा, उ० दक्षता.

प्र० यशका मुख्य स्थान कौनसा, उ० दान.

प्र० मैत्री किसके संग हुई घटती नहीं है,
उ० साधुके संग.
प्र० क्या छोडनेसे प्रिय होता है, उ० मान.
प्र० क्या छोडनेसे शोक नहीं होता है, उ० क्रोध.
प्र० क्या छोडनेसे सम्पत्तिवान् होता है,
उ० इच्छा छोडनेसे.
प्र० याचकोंको किसवास्ते देते हैं;
उ० पुंण्य प्राप्ति वास्ते.
प्र० नटनर्तकोंको किसवास्ते देते हैं,
उ० लौकिकके वास्ते.
प्र० सेवकोंको किसवास्ते देना,
उ० उन्होंका संसार चलाने वास्ते.
प्र० राजाको किसवास्तेदेना,
उ० अपना भय मिटनेको.
प्र० लोग किसमें लिपटे हुये हैं
उ० अज्ञानमें.

प्र० आर्जव कौनसा,

उ० सर्वके ऊपर समान चित्त रखना.

प्र० पुरुषको अजीत शत्रु कौनसा, उ० क्रोध.

प्र० अतिशय बडी व्याधि कौनसी, उ० लोभ.

प्र० साधु कौनसा,

उ० प्राणी मात्रका हित करना.

प्र० असाधु कौनसा, उ० निर्दयी.

प्र० मोह कौनसा, उ० जिस कारणसे धर्म नहीं समझा जाता सो.

प्र० मान कौनसा, उ० अपनही बडे हैं ऐसा समझता है सो.

प्र० आलस्य कौनसा,

उ० अपना स्वहित नहीं देखना सो

प्र० शोक करने योग्य क्या है, उ० अज्ञान

प्र० स्थिर क्या, उ० धर्मकी स्थिरता.

प्र० धैर्य कौनसा,

उ० इन्द्रियां स्वाधीन करना